हुआ अवतरण धरा पर शिवपिता का
अन्धकार मिटा अज्ञानता का
नयी सृष्टि का होने लगा आगमन
ज्ञान सूर्य चमकने लगा अब
ख़त्म हो रहा रावण का साम्राज्य
स्वराज्य मिला जब आत्मा का
धरती पर ज्ञान गंगायें बहने लगी
ज्ञान सागर संग कुभ्भ का मेला लगा अब
पतित सृष्टि को पावन लगी बनाने
गीता के भगवान को पुकारने लगे सब
पतितपावन शिव ने लिया धरा पर अवतरण
कलयुग का अंत किया, करा आरम्भ सतयुग का
आदि देवी देवता धर्म की हुई स्थापना
अनेक धर्मो को हुआ अब विनाश
एक धर्म, एक मत ,एक राज्य से बना स्वर्ग
देह के धर्म से हुए मुक्त ,छूटा आसुरी नर्क
श्रेष्ठ कर्मो की कलम लगी बना देवी साम्राज्य
सुख शांति प्रेम आनंद का स्थापित हुआ रामराज्य
शिव जयंती का पर्व याद दिलाता प्रभु आगमन का
संगम पर भाग्यविधाता आया, खुला उसका ज्ञान भंडारा
भर लो झोली यह दिन न आयेगा दुबारा